शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

शिवमूर्ति के कथा साहित्य में शब्द शिल्प

प्रहलाद सिंह अहलूवालिया, सम्पादक, शोधबोधालय शोध–पत्रिका, हिसार(हरियाणा)

मेल आईडी : ahluwalia002@gmail.com

सारांश –

कहानी हर साहित्यकार की सबसे प्रिय विधा होती है। शिवमूर्ति भी इस विधा के लेखन में हस्तदक्ष रहे हैं। उन्होंने कहानी साहित्य के जगत में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। उनके साहित्य का महत्वपूर्ण पहलू कहानी विधा है। प्रेमचंद के समान उन्होंने भी अपनी कहानियों का कथ्य सामाजिक धरातल पर उकेरा है। उन्होंने अपनी कहानियों में गरीबी, ग्रामीण क्षेत्र, दलित समस्यायें, स्त्री की वकालत आदि भावनाओं को विषय बनाया है। कहानी विधा के रूप में मानो लोक जीवन को अपने साहित्य में रूपायित किया है।

मुख्य शब्द – साहित्यकार, कहानी, सामाजिक एवं समस्यायें।

प्रस्तावना –

साहित्यकार शिवमूर्ति के साहित्य की विशेषता यह है कि किसी भी देश काल में अवस्थित होते हुए भी उनकी रचनायें समय के अनुरूप गमन करती हुई प्रतीत होती हैं। उनका साहित्य अमूर्त सत्ता से जोड़ने वाला है। शिवमूर्ति का साहित्य सामान्य से अलग हटकर है, उनकी रचनाएं विशिष्ट कछुए को समेटे हुए हैं। उनके गद्य में जीवंतता बरकरार रहती है। उनकी संवदेनाएं और अनुभव अत्यधिक गहरें हैं। उनकी रचनाओं का परिवेश जमीनी वातावरण से जुड़ा हुआ है। उनका साहित्य ग्रामीण जीवन शैली से ओत–प्रोत है। उनकी रचनाओं में प्रेमचन्द और फणीश्वरनाथ रेणु के समान व्यापक परिवेश भले ही न हो लेकिन ग्राम्य जीवन शैली की आंतरिक और बाह्य प्रकृति का चित्रण उन्होंने गहराई और सूक्ष्मता के साथ किया है। हिन्दी साहित्य जगत में प्रेमचन्द और फणीश्वरनाथ रेणु के बाद शिवमूर्ति ही एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी समस्त रचनाएं ग्राम्य जीवन की सूक्ष्मताओं का वर्णन प्राप्त होता है। अनेक साहित्य में जो आत्मीयता, वस्तुनिष्ठा और समरसता दिखाई देती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनके साहित्य का विशेष अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि प्रेमचन्द के समकालीन साहित्यकारों में उन्होंने एक कदम आगे का ही दर्जा बनाया है। उनके साहित्य में सामान्य जीवन की वास्तविकताओं का सूक्ष्म चित्रण प्राप्त होता है जिसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनके काव्य में कला के प्रति उतना आग्रह नहीं है जितना धरती की गंध के

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

प्रति है। शिवमूर्ति धरती के रूप रस, गंध और सरसता के प्रति अत्यंत सचेत रहे हैं। वह मानव इस वातावरण में स्वयं को विलीन सा कर लेते हैं। अपने चारों ओर के वातावरण के प्रति एकरस हो जाते हैं। वह अपने चारों ओर व्याप्त ग्रामीण जनता की भावनाओं को, उनके आदर्शों को, उनके विश्वास, हास–परिहास, आशा और आकांक्षाओं को मानो स्वयं अनुभव करते हुए अपने शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। ऐसा लगता है जैसे मानव मात्र के जीवन की डोर को पकड़कर उसे सहज और सरल अभिव्यक्ति प्रदान करने में उन्होंने दक्षता हासिल कर रखी है। यही कारण है कि उनकी सभी कहानियों और उपन्यासों का कथ्य अपने देश की मिट्टी की गंध से महक उठा है। उनके कथ्य की यह खुशबू और अधिक व्याप्त हो इसके लिए जैसे पवन के झोंकों की भी अपेक्षा नहीं होती बल्कि वह खुशबू स्वयं ही गति धारण करते हुए चारों ओर परिव्याप्त हो जाती है। यही उनकी रचना प्रक्रिया की विशेषता है।

शिवमूर्ति की कहानियों में भाषा–शिल्प –

सृजन के भीतर विविधता और विस्तार लाने के लिए हर लेखक के लिए आवश्यक है कि वह जनसाधारण की समस्याओं के साथ गहराई से जुड़े और उन्हीं को अपनी रचनाओं के जरिए वाणी प्रदान करें, ताकि उनका सार्वजनिक समाधान ढूँढा जा सके। तथा वह रचनात्मक लेखन कहला सकता है। दूसरे शब्दों में यदि कहं` तो देश और दुनिया की समस्याओं से अछूता रहकर कोई भी सच्चा रचनाकार अपनी रचनाओं का निर्माण नहीं कर सकता।

शिवमूर्ति की भी रचना प्रक्रिया के संबंध में यही धारणा है। उस रचना का क्या महत्व जो अपने समकालीन संदर्भों का अंकन न करे, समकालीन संदर्भ का आशय केवल कुछ घटना प्रसंगों का चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह है कि रचनात्मक लेखन में समकालीन जीवन की अधिकतर समस्याओं को वाणी प्राप्त हो और उनका सार्थक समाधान ढूँढा जा सके।

धरती पर रह–रहे जीवधारियों में मनुष्य इस कारण से भिन्न और सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि उसके पास भाषा है। ''सामान्यतः भाषा मनुष्य की सार्थक व्यक्त वाणी को कहते हैं। 'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है।

इसका अर्थ वाणी को व्यक्त करना है। इसके द्वारा मनुष्य के भावों, विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।''[1]

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

वर्तमान समय में मनुष्य की अभूतपूर्व उन्नति और उत्कर्ष का मूल उसकी भाषागत योग्यता में निहित है। भाषा मनुष्य व समाज के लिए वरदान साबित हुई है। मनुष्य किसी बात या चीज को देखकर और अपनी भाषिक क्षमता को अभिव्यक्ति कर सकता है।

भाषा व्यक्ति व्यापक जीवनानुभव, सूक्ष्म निरीक्षण, विचारात्मकता, संवेदनशीलता आदि का भी परिचय कराती है। यों तो भाषा के विविध प्रयोग शब्द योजना, शैलियों, मुहावरें, कहावतें, लोकोक्तियाँ आदि सभी भाषिक उपकरण हैं और व्यक्ति भाषा के इन विभिन्न रूपों, का प्रयोग करते हुए अपने रचनात्मक कार्यों को मूर्त रूप प्रदान करता है उसी में लेखक के भी प्रतिभा और दर्शन का अंकन देखने को मिलता है। हिन्दी व्याकरण और शब्दकोशों में भाषा शब्द के अर्थ कई प्रकार से दिए गए हैं, जैसे डॉ. श्यामसुन्दर दास के अनुसार – ''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान–प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।''[2]

अर्थात् भाषा उसे कहते है जिसके द्वारा बोली, बानी को मुख से उच्चरित होने वाले परस्पर संबद्ध शब्दों और वाक्यों आदि का वह ध्वनि समूह जिसके माध्यम से मन का भाव बताया जाए।

इस प्रकार भाषा मनुष्य के भाव और विचारों की अभिव्यक्ति का सबसे सुगम और श्रेष्ठ साधन है। किसी साहित्यकार को अपने साहित्य में जो कुछ अभीष्ट या कहने योग्य होता है, उसे वह भाषा के द्वारा कह देता है। भाषा का ही आधार प्राप्त कर रचनाकार रचना के उद्देश्य को भी परोक्ष या अपरोक्ष रूप से स्पष्ट करता है। अतः इस दृष्टि से भाषा का महत्व अत्यधिक है।

साहित्य की भाषा जनता की बोलचाल की भाषा से भिन्न होती है, परन्तु जनता की बोलचाल की भाषा से ही साहित्य की भाषा पुष्ट और ऊर्जावान बनती है। क्योंकि आखिर जनभाषा या लोकभाषा से पृथक होकर कोई भी भाषा अधिक समय तक नहीं टिक सकती। प्रगतिवादी–यथार्थवादी रचनाकर जनता की भाषा का ही समर्थन करते हैं। जहाँ तक शिवमूर्ति का सवाल है, उनके सम्बन्ध में पहले ही कहा जा चुका है कि वे सन् 1980 के बाद के एक श्रेष्ठ यथार्थवादी और प्रगतिशील कथाकार हैं। अपने साहित्यिक जीवन में मानवतावादी विचारधारा के प्रकाश में वे आगे बढ़े हैं।

शिल्प का अर्थ हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम, दस्तकारी, कारीगरी, कला संबंधी, व्यवसाय आदि से है। ''शिल्प विधि के लिए अंग्रेजी में टेकनीक शब्द का प्रयोग होता है। शिल्पविधि से तात्पर्य किसी कृति के निर्माण की उन सारी प्रक्रियाओं तथा रचना पद्धतियों से है जिनके माध्यम से शिल्पकार या रचनाकार अपनी अमूर्त जीवनानुभूतियों, मनः

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

प्रभावों तथा विचारों और भावों को मूर्त रूप देकर अधिकाधिक संवेद्य और सौंदर्यमूलक बनाता है।''[3]

शिवमूर्ति शिल्प के प्रति कतई आग्रहवान नहीं है। अपने साहित्य में वे शिल्प की अपेक्षा आमजनता की भावनाओं, आशा, आकाक्षाओं, को महत्व देते हैं।

फिर भी उनकी शिल्प–संबंधी धारणा को देखने पर पता चलता है कि वे कला या साहित्य को जीवन की तरह सहज रूप में देखना पसन्द करते हैं। साधारण जनता की भाषा अर्थात् सरल भाषा को साहित्य के लिए अधिक उपयोगी मानते हैं। मुद्राराक्षस के अनुसार ''बिना अनुभव के अच्छा लेखन संभव नहीं है। बिना किसी शक के शिवमूर्ति के कथानक उनके अपने अनुभवों से उपजे हुए लगते हैं। बिना पूरा पढ़े हुए किसी भी रचना की कथा और उसकी भाषा पर टिप्पणी करना ठीक नहीं है। जितना पढ़ा है उसके आधार पर उनकी भाषा उनके चरित्रों की ही बोली है। एक अच्छे लेखक की छवि है। एक ऐसा लेखक जो अच्छा और सार्थक लिखता हो।''[4]

ग्राम्य–केंद्रित कथाकार होने के कारण शिवमूर्ति ने अपने कथा–साहित्य में प्रेमचन्द की तरह बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। अपनी कथा भाषा को जीवंत और सर्वव्यापी बनाने के लिए उन्होंने भारतीय ग्राम्य–जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से शब्द, मुहावरें, लोकोक्तियाँ, कहावतों का चयन किया है। साहित्य की दृष्टि से आदर्श भाषा के लिए उक्त तरह के समिश्रण की आवश्यकता होती है। तभी वह साहित्यकार के भाव तथा विचारों का माध्यम बन सकती है। इस दृष्टि से शिवमूर्ति की कहानियों की भाषा स्थानीय रंग से युक्त, सहज, सरल और संप्रेषणीय है। दूधनाथ सिंह के अनुसार ''कहानी में नए प्रयोगों को स्थापित करना और पाठकों और आलोचकों से उसकी स्वीकृति लेना एक अत्यंत कठिन काम है। शिवमूर्ति क्योंकि अपनी कहानियों में कोई प्रयोग नहीं करते, शिल्प भाषा और कथ्य के स्तर पर भी वह कोई नई चमकदार और अनहोनी बात नहीं कहते, ठीक प्रेमचंद की तरह ही, अतः उनकी स्वीकृति स्वाभाविक है।''[5] शिवमूर्ति की कहानी–साहित्य के भाषा–शिल्प में शब्द योजना, कहावतें, मुहावरों, सूक्तियों, भाषा और शैलियों के विविध रूप आदि उपशीर्षकों में रखकर विश्लेषित किया गया है।

शब्द–योजना –

सार्थकता की दृष्टि से भाषा में सर्वप्रथम शब्दों पर विचार किया जाता है। परम्परागत रूप में शब्दों के तत्सम, तद्भव, विदेशी तथा देशज ये चार वर्ग बनाये जाते हैं। शिवमूर्ति की कहानियों की भाषा निर्मित उक्त चार प्रकार के शब्दों के अलावा ग्रामीण बोली–बानी के अनेक शब्दों से हुई है। क्योंकि वे ग्रामजीवन के सशक्त चित्रकार हैं। इसी कारण उनकी

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

कहानियों की भाषा में स्थानीय या ग्रामीण–आँचलिक शब्दों की भरमार है। उनकी शब्द सामर्थ्य प्रशंसनीय है। उनकी भाषा में ग्रामीण बोलचाल की भाषा के शब्दों की ही प्रधानता है। रचनाकार ममता कलिया के अनुसार ''शिवमूर्ति की रचनाएँ मुझे इसलिए भी आकर्षित करती हैं क्योंकि उनकी रचनाओं में केवल गाँव के लोग हैं। वह भी अपनी सभी बुराइयों, कमजोरियों व संवेदनाओं के साथ उपस्थित रहते हैं । ग्रामीण जीवन की विद्रूपता को दिखाने के लिए वे बाहरी तत्वों, पात्रों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करते।''[6]

शब्द–योजना की दृष्टि से शिवमूर्ति के कथा भाषा की ओर ध्यान देने पर लक्षित है कि भाषा में निश्चय ही एक रचनात्मक सामर्थ्य के दर्शन होते हैं।

यहाँ शिवमूर्ति के शब्द योजना को निम्नांकित उपशीर्षकों से विभाजित करके विवेचित किया गया है।

- स्थानीय या देशज शब्द
- तत्सम शब्द
- विदेशी शब्द

1. स्थानीय या देशज शब्द –

स्थानीय या देशज शब्द उन्हें कहते हैं, जिनकी व्युत्पत्ति संस्कृत से सिद्ध नहीं होती। उन्हें लोक में उत्पन्न और प्रचलित ग्रामीण शब्द भी कहा जा सकता है। चूँकि शिवमूर्ति ग्राम्य केंद्रित कहानीकार हैं, अतः जीवन का खाका खींचते हुए उन्होंने उसी के अनुरूप शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। जिससे ग्रामीण दृश्य ही नहीं, उनके पात्र भी सजीव हो उठते हैं। शिवमूर्ति की कहानियों में स्थानीय शब्दों के निम्नांकित रूप दिखाई देते हैं।

ठेठ ग्रामीण शब्द –

परधान, मन्तर, अगवार–पिछवार, पैतरा, विसूरती, कलजुग, अमावट, पंजीरी, फिचकुर, भतार, चिरई, नथुने, बोझवा, तोहार पतोहू, बियहा, बिगवा, सिरहाना, रच्छा, खेप, टरक मरियल, पगुराते, गोहार, करिखा, लहास, ऐब, अकिल, छितराए, लत्ता लइया, भिनसारे, ढिबरी, लोगन, सखा, नेनुआ, शहराती मूस, चुचाके, बधिया, छटाँक–छटाँक, चबेना, बँसवारी, किवाड़, माचे, ग्रहन परसाद, नैहर, पच्छ, डेहरी, मुर्रा भैस, मेहरारू, टिकुली, डोलची, चिरौरी, बिदककर, अलगौझा, गोरू, हड्डहा बैल, मोहार (द्वार) पुआल, कथरी, नोन, बितउबै, जिनगी आदि।

2. तत्सम शब्द –

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

तत्सम उन शब्दों को कहा जाता है, जो संस्कृत के शब्द–रूप में प्रचलित हैं। शिवमूर्ति की कहानियों में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग पात्र, परिस्थिति तथा विचारों के अनुसार हुआ है। नित्यकर्म, साष्टांग, प्रत्युत्तर, किंचित, सम्भ्रमित, निस्पन्द, भविष्यद्रष्टा, जिजीविषा, असहिष्णु, अवचेतन, प्रतिकूलता, स्निग्ध, विरक्ति, निरापद, रौद्र रूप आदि।

3. विदेशी शब्द –

विदेशी शब्द उन शब्दों को कहा जाता है, जो विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में आए हैं और अब हिन्दी के हो गए हैं। आजादी से पूर्व अंग्रेजी शासन के कारण अंग्रेजी तथा उसके पहले इस्लामी शासन काल में पहले फारसी और उसके बाद उर्दू राजभाषा के रूप में स्थापित थी। आजादी के बाद हिन्दी राजभाषा बनी। अतः उक्त भाषाओं के शब्द हिंदी में अनायास स्थान पा गए हैं। शिवमूर्ति की कहानियों में प्रयुक्त विदेशी शब्दों को निम्नांकित उपशीर्षकों के द्वारा विश्लेषित किया गया है।

अरबी शब्द या फारसी शब्द –

अइन्दा, आगाह, खिलाफत, दरखास्त, गोश्त, अहाते, हुजूर, नासूर, वास्ते, नब्ज, करतूत, तोहमत, शिकस्त, तजुर्बा, अपाहिज, मुर्दा, लावारिस, अर्दली, हया, तासीर, आमादा, खोराकी, मुकाम, हरामजदा, इतवार आदि।

अंग्रेजी शब्द –

इलेक्शन, प्राइमरी, स्कूल, मिनिस्टर, एमेले, लीडर, एयर कडीशंस, कोच, इंटरकास्ट, लिटरेचर, पैरालिसिस, टाइम, क्रिमिनल, इनवेस्टिगेशन, टयूटर, अनमैरिड, सबमिट, इंस्पेक्टर, सर्कुलर, हेडक्वार्टर, पर्सनल, टेररिस्ट, कॉन्फिडेंशियल, फाइल, एंट्री, करेक्टर इम्पॉसिबल, अथॉरिटीज, इंटरफियर, पॉलिटिकल, इनवॉल्व लिस्ट, लास्ट, वार्निंग, बिल्डिंग इत्यादि।

मुहावरें –

ग्रामीण–नगरी, पहाड़ी–मैदानी, समुद्र तटीय–जंगली आदि जिस प्रदेश या जीवन को आधार बनाकर कहानियों का सृजन किया जाता है, उसमें प्रचलित मुहावरों, लोकोक्तियों, और कहावतों आदि के प्रयोग से उसकी भाषा में प्रवाहशीलता और सजीवता का समावेश हो जाता है। यद्यपि शिवमूर्ति ने भाषा को साध्य रूप में नहीं साधन रूप में अपनाया रूप है फिर भी उनकी कहानियों में वर्णित जीवन और परिवेश उनका प्रत्यक्ष अनुभूत और भोगा हुआ होने से वहाँ की बोलियों में प्रचलित मुहावरें, कहावतें आदि भाषिक उपादान अनायास आ गए हैं।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

इससे उनके भाषा–सौंदर्य में वृद्धि ही हुई है। शिवमूर्ति की लगभग प्रत्येक कहानी में मुहावरों का विषयानुरूप प्रयोग हुआ है। जैसे जले पर नमक छिड़कवाना, आँख में आँख डालकर कहना, दाँत पीसते हुए, पट खोल देना, गुलछर्रे उड़ाना, अफीम का नशा, लबर–लबर करना, फूट–फूट कर रोना, देहरी लाँघना, मुक्ति दिलाना, गुड़ गोबर करना, सन्न हो जाना, दिमाग चढ़ना, कच्चा चबा जाना, उल्टे पैर लौटना, जमीन खिसकना आदि।

कहावतें –

कहावतें ग्रामीण जनता की संपत्ति होती हैं। कहानियों में कहावतों का प्रयोग बात या कथन को अधिक स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। कहावतों का संबंध वास्तविक जीवन से होता है। शिवमूर्ति ग्रामों की वास्तविकता को उजागर करने वाले रचनाकार हैं, अतः उनकी कहानियों में कहावतों का सुन्दर प्रयोग हुआ है, यथा–जैसे मुड़ मुड़ाकर गधे की सवारी, कातिक की कुतिया, पेशाब से मूँछ मुड़ा दूँगा, कालिक पुता मुँह, तिरिया चरित्रम पुरूखष्य भाग्यम्, करम का भोग तो भोगना ही पड़ेगा, हाथी–हाथी होता है महावत–महावत आदि।

सूक्तियाँ –

सूक्तियाँ मनुष्य के जीवन के अनुभवों का सत्य हैं। लेखक अपने जीवनगत निष्कर्षों को इसमें गूँथ देता है। लेखक द्वारा बीच–बीच में इन सूक्तियों के समावेश से भाषा में शक्ति की महत्ता बढ़ जाती है। शिवमूर्ति ग्रामीण परिवेश में जन्में और वहीं पले–बढ़ें हैं, अतः ग्रामीण बोलबाल की भाषा में व्याप्त अनेक सूक्तियों के समावेश से उनके भाषा–सौंदर्य में अभिवृद्धि हुई है। यहाँ उनके कहानी साहित्य से कुछ सूक्तियाँ ली गयी हैं। जैसे–जो पैदा होता है वह मरता ही है, ईश्वर की जो मरजी होती है वह होता है, करम का भोग तो भोगना ही पड़ेगा, आदि।

अपमान वाचक शब्दों, गालियों का प्रयोग–

शिवमूर्ति आज के यथार्थवादी कथाकार हैं, अतः उन्होंने ग्रामीण परिवेश में प्रयुक्त लगभग सभी तरह के शब्दों के प्रयोग से कहानियों में सजीव वातावरण की सृष्टि की है। वातावरण को जीवंत बनाने के क्रम में कुछ अपमान वाचक शब्दों अथवा गालियों का आ जाना स्वाभाविक है। उनकी कहानियों में निम्नांकित गालियों का प्रयोग यत्र–तत्र हुआ है। जैसे – हरामजादे, गँजेड़ी, मुँहकट, हरामी, जालिम, बदमाश, उचक्का, नीच, कमीना, साला, दहिजार, ससुरा, पगला, बेवकूफ, कायर, सार, ससुर के नाती, मक्कार, मुँह झँउसा, चोर–चाई आदि।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिवमूर्ति मानवतावाद के प्रति आस्था रखने वाले एक प्रगतिशील साहित्यकार हैं। उनके तीनों उपन्यास तर्पण, त्रिशूल और आखिरी छलाँग कथ्य के साथ–साथ शिल्प की दृष्टि से भी विशिष्ट हैं। कहानियों की भाँति अपने उपन्यासों के कलात्मक पक्ष को परिपूर्ण करने के लिए शिवमूर्ति ने भाषा का सहज किन्तु प्रभावशाली प्रयोग किया है। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है, उनके कथा साहित्य की भाषा सहज, सरल और आँचलिकता के पुट से संप्रेषणीय भाषा है। पात्रानुकूलता, चित्रात्मकता, आत्मकथात्मक, संवादात्मक और व्यंग्यात्मकता आदि विशेषताएँ उनकी भाषा को विशिष्टता प्रदान करती हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, भारती भवन प्रकाशन पटना, संस्करण : 2012, पृ.सं. 01

2. वहीं, पृ.सं. 02

3 डॉ. जवाहर सिंह, हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्प, विधि, नेशनल पब्लिशिंग दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण : 1986, पृ.सं. 01

4. लमही, संपादक ऋत्विक राय, अंक–20, अक्टूबर–दिसंबर 2012, पृ.सं. 241

5. वहीं, पृ.सं. 243

6. वहीं, पृ.सं. 244